

— 4) aussprechen, sagen, verkünden, mittheilen: किमशस्तानि शंससि AV. 6, 43, 1. Çat. Br. 4, 3, 21. शंस मे कासि कस्य वा MBh. 3, 2584. 13. 1880. R. 1, 9, 26. 2, 35, 21. 37, 10. 87, 13. 90, 18. 92, 3. 8. R. GORR. 2, 37, 12. 3, 55, 46. 4, 25, 26. RAGH. 11, 84. मायेति शंससि 12, 74. नीचैः शंस Spr. 2213. RĪĠA-TAR. 3, 245. 4, 508. BHĠG. P. 3, 19, 27. 6, 11, 1. कुलगोत्रे शंसन् M. 3, 109. ग्रामे दोषान्समुत्पन्नान् — शंसद्वामदशेशाय 7, 116. fg. 8, 233. कर्मणां फलनिर्वृतिं शंस नस्तद्वतः पराम् 12, 1. वंशकरान्पृथक् MBh. 1, 3184. 2, 2622. 3, 2905. 5, 7515. 12, 1061 (हृच्छयं mit der ed. Bomb. st. हृदयं zu lesen). R. 1, 1, 58. 2, 35, 20. R. GORR. 1, 9, 28. 3, 55, 50. RAGH. 2, 68. 3, 5. 16. 4, 72. 76. 9, 77. KUMĀRAS. 5, 51. VIKR. 103. KATHĀS. 12, 122. 160. 15, 110. 18, 401. 22, 54. 171. 23, 77. 25, 157. 27, 119. 30, 71. 32, 130. 56, 267. 61, 6. 277. BRAHMA-P. in LA. (III) 53, 19. BHĠG. P. 1, 1, 9. 18, 11. 9, 9. 3. शंससिरे MBh. 1, 7684. 3, 12345. शंसधम् R. 3, 53, 43. 45. शंसिथाः 44. नत्नं यदि न शंससि so v. a. wenn du mir nicht sagst, wo Nala ist, MBh. 3, 2435. 2525. तौ वाल्मीकिमशंसताम् sagten, dass es Vālmiki sei, RAGH. 15, 69. मा चास्मै प्रोषितं (so ed. Bomb.) रामं मा चास्मै पितरं मृतम् । भवतः शंसिषुः sagt ihm nicht, dass R. 2, 68, 8. तामश्चजसत्पूणी रथध्वजाविभूषिताम् । शंसं सेनां रामाय 97, 14. 3, 55, 47. 4, 31, 18. RAGH. 5, 29. KUMĀRAS. 3, 60. शंसुस्ते चात्र तां मिथ्यावादिनीं स्त्रियम् KATHĀS. 23, 24. कार्पादिकं सो ऽस्मै तद्वतारं शंसं 53, 40. (ohne Worte) anzeigen, verrathen, zu wissen thun: उत्तरीयं वरारोक्तां शुभान्याभरणानि च । मुमोच यदि रामस्य शंसयुरिति ज्ञानकी ॥ R. 3, 60, 7. दुष्प्रयुक्ता गौः = वाक् पुनर्गोत्रं प्रयोक्तुः सैव शंसति Spr. (II) 2210. (दशो हृत्पृथक्) शंसत्यो रागमुत्त्वणाम् (I) 4963. KIR. 5, 23. KATHĀS. 21, 103. दूरीभवत्तं तं शंसतेवात्तरात्मना 38, 78. शंसुस्तेपराम्भम् । नर्गया नरनाथेभ्यस्तुदृष्टालमेखलाः ॥ RĪĠA-TAR. 1, 301. मन एव मन्यस्य पूर्वप्राणि शंसति BHĠG. P. 4, 29, 66. शंसति (या) बन्धकीं ताम् VARĀH. BRH. S. 89, 8. सैव (शिवः) शंसते सलिले मृतम् 90, 7. ankündigen, vorhersagen, verheissen: इमानि हि निमित्तानि सद्यः शंसन्ति विप्रकम् R. 3, 74, 12. 78, 11. HARIV. 4235. KUMĀRAS. 2, 22. VARĀH. BRH. S. 86, 62 (med.). 89, 2. KATHĀS. 18, 49. 44, 134. MĀRK. P. 43, 30. BHĠG. P. 1, 14, 10.

— caus. 1) aufsagen —, recitiren lassen: विवृतं षोडशिनम् AIT. Br. 4, 4. सूक्तम् 32. 5, 14. 6, 30. LĀṬI. 3, 6, 18. तांस्त्वं शंसय सूक्ते द्वे वैद्यदेवे BHĠG. P. 9, 4, 4. — 2) ankündigen, vorhersagen: एष वञ्जुलको नाम पत्नी — अपसव्यं प्रयात्याम् शंसयन्तौ मरुद्भयम् R. 3, 74, 13.

— अति 1) darüber hinaus —, weiter aufsagen: स्तोत्रम् AIT. Br. 4, 6. एकां द्वे न स्तोममतिशंसते (vgl. ÇĀṆKH. ÇR. 12, 2, 10) 6, 8. 23. ÇĀṆKH. ÇR. 13, 7, 3. 8, 3. — 2) im Aufsagen übergehen: सूर्यम् AIT. Br. 4, 10.

— अघि, partic. ० शस्त (= प्रबल NILAK.) vielleicht fehlerhaft für अ-भिशस्त verrufen, gefürchtet: कृत्यानामधिशस्तानामरिष्टशमनं मरुत् MBh. 13, 3139.

— अनु 1) nach Jmd aufsagen, — preisen: ये चेमां अनुशंसं (inf.) RV. 5, 50, 2. TS. 5, 6, 8, 6. होता TBR. 1, 4, 5, 1. कथमस्य पावमान्यो ऽनुशस्ता भवन्ति AIT. Br. 2, 37, 3. 4, 17. परिमितं स्तुवत्यपरिमितमनुशंसति 4, 6, 8, 1. ÇAT. Br. 4, 2, 3. 12, 8, 1. 3, 4, 10, 1, 1, 6. अग्निं संचितमनुगीतमनुशंसते ऽऽCV. ÇR. 4, 8, 24. शंसतमनुशंसन्ति बह्वृचाः शस्त्रकोविदाः KŪLIKOP. in Ind. St. 9, 14. — 2) vor Augen haben, in Betracht ziehen: फलमेवानुशंसन् (= आलोचयन् Comm.) BHĠG. P. 10, 16, 33.

— अभि 1) beschuldigen, Jmd etwas Uebles nachsagen; pass. übeln Leumund haben: यमज्ञघ्नंवासमभिर्शंसैषुः TS. 2, 1, 10, 2. 2, 5, 1. 3, 7, 4. 5, 1, 6. मरुतापोपपापाभ्यां यो ऽभिर्शंसैन्मृषा परम् JĀĠN. 3, 286. अनुतम् fälschlich PAKĀV. Br. 6, 10, 6. 7. KĀṬH. 12, 5. यदभिशस्यमानमालिङ्ग्यं कारयेत् AIT. Br. 3, 46. 5, 30. स्यात्तो ऽभिशस्तवान्गार्ग्यमयमानिति HARIV. 6429. अभिशस्त beschuldigt, eines Vergehens angeklagt, bescholten AK. 3, 1, 43. H. 436. धात्रा यवीयसा M. 8, 116. R. GORR. 2, 9, 7. MĀRK. P. 31, 27. न कुध्यत्यभिशस्तो (अभिशस्तो SCHL.) ऽपि R. ed. Bomb. 2, 41, 3. M. 8, 373. 2, 185. 3, 159. 4, 211. MBh. 7, 1457. Spr. (II) 506. Verz. d. Oxf. H. 86, b, 19. JĀĠN. 1, 161. मिथ्याभिशस्त 3, 285. अनुताभिशस्त Verz. d. Oxf. H. 282, b, 29. Spr. 4875. KĀM. NITIS. 17, 31. beschimpft MBh. 5, 1277 (= अभितः शस्त्रैर्विदीर्षाः NILAK.; also auf शस् zurückgeführt). HARIV. 913 (अभिशस्त die neuere Ausg.). 6430 (अभिशस्त die ältere Ausg.). verflucht, verwünscht: (यथा समुद्रः) ब्राह्मणैरभिशस्तः सन् (अभिशस्तश्च ed. Bomb.) बभूव लवणोदकः MBh. 13, 7219. Hierher (und nicht zu शस्) wohl auch die Bed. bedroht: (गाम्) आतुरामभिशास्तां वा चौरव्याघ्रादिभिर्नयैः M. 11, 112. — 2) loben, preisen: मरुद्वातं परिगृह्याभिशास्य च R. 2, 11, 16. किं नाम कृपणं दैवमशक्तमभिशासति 23, 8. — Vgl. अनभिशस्त fgg., अभिशंसन fgg. und अभिशस् fgg.

— अघ s. अघशस्.

— आ 1) hoffen —, rechnen —, vertrauen auf; erstreben (acc. loc. dat.); med.: य आशंसैत् भूत्याम् AV. 12, 4, 44. AIT. Br. 2, 16. 3, 46. TS. 2, 5, 8, 6. यदि शीतः स्यान्नाशंसते dann gebe man die Hoffnung auf ÇAT. Br. 1, 5, 4, 1. आ ह वा अस्मिन्स्वाद्य निद्याश्च शंसते 6, 4, 17, 9, 3, 35. अबलीयान्बलीयांसमाशंसते धर्मणा sucht oder hofft zu bemeistern 14, 4, 9, 26. यो वै ब्राह्मणो वा शंसमानो (वाशं ० zu lesen) ऽनुचरति तत्रियं वायं मे दास्यतीति 2, 3, 4, 6. ऽऽCV. GRH. 4, 1, 3. KAUC. 88. राख्ये PAKĀV. Br. 19, 1, 2. तं कर्तुं नाशंसत 13, 6, 9. — MĀLAV. 10, 9. दौहित्राहोकां MBh. 1, 6137. पुत्रेषु यशः कीर्तिम् u. s. w. 3, 13647. R. 2, 30, 43. 51, 5 (48, 5 GORR.). 86, 6 (94, 7 GORR.). वनवासकृतं सुखम् 52, 47. KUMĀRAS. 3, 57. ÇĀK. 48. आशाम् R. 2, 75, 35. गुणम् (voraussetzen bei, mit loc.) 19, 24. आशंसे त्वां जितमित्रं सौहार्दाद-रुमोदशम् R. GORR. 2, 92, 9. विज्ञायाम् MBh. 1, 148. fgg. ÇĀK. 172. उपाध्यायश्रेयागच्छेदाशंसि ऽधीयीय P. 3, 3, 134. Schol. नाशंसि यदि ते सर्वे जीवेयुः शर्वरीमिमाम् ich habe keine Hoffnung, dass R. 2, 86, 15. नाशंसि यदि जीवन्ति सर्वे ते शर्वरीमिमाम् 51, 14 (48, 14 GORR.). आशंसते (so ed. Bomb.) हि पितरः सुवृष्टिमिव कर्षकाः । अस्माकमपि पुत्रो वा पौत्रो वानं प्रदास्यति ॥ MBh. 13, 3219. आशंसि स्वाशिता (so ed. Bomb.) सेना वत्स्यतीमां (वसतिमां v. l.) विभावरीम् R. 2, 84, 18. — act.: गर्भन्त्रसे वसूण्या हि शंसिषम् RV. 10, 44, 5. अरितयम् MBh. 2, 1904. 13, 4734 (wohl ग्रहान् zu lesen). R. GORR. 2, 17, 7. 26, 3. कृतं लवणमाशंसुः (ohne redupl.) शत्रुघ्नस्याभिषेचनात् 7, 63, 18. आशंसामि क्षिप्रमेष्यति राघवः 5, 33, 15. आशंसित gehofft, erwartet R. GORR. 2, 74, 29. KIR. 5, 52. BHĠG. P. 10, 73, 18. scheinbar auch RAGH. 1, 86, wo aber mit der ed. Calc. पाच्यमाशंसितावन्ध्यम् (आशंसिता nom. ag.) zu lesen ist. — 2) befürchten; med.: शमलम् BHĠG. P. 1, 13, 31. भयम् 5, 8, 9. — 3) wünschen, ein Verlangen haben nach; med. Dhātup. 16, 28 (इच्छायां, आशिषि). कुरुप्रवीरान् MBh. 1, 7148. mit infin. MBh. 3, 10640. fg. 17171. (न) चिरं जीवितुमाशंसि रुदती चापि मैथिलीम् R. 2, 12, 70. 6, 2, 32. संयामम् BHĀṬI. 14, 70. आशिषः (so v. a.